Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2021: 7.278,
http://www.srjis.com/issues_data?issueId=215
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, JUNE-JULY 2023, VOL-11/58
https://doi.org/10.5281/zenodo.8220624

उपन्यास और सिनेमा का अंतर्संबंध : विशेष संदर्भ मराठी उपन्यास

वृषाली सुरेश बापट[1] & सुरभि विप्लव[2] Ph.D

[1]पीएच.डी. शोधार्थी (फिल्म अध्ययन),प्रदर्शनकारी कला विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
[2]सहायक आचार्य (फिल्म अध्ययन), प्रदर्शनकारी कला विभाग (प्रयागराज केंद्र), महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Paper Received On 20 July 2023
Peer Reviewed On 28 July 2023
Published On: 1 August 2023

Abstract

सारांश:

सिनेमा कला की एक शाखा है जो फिल्म में संवाद, संपादन, दृश्य के लेआउट, प्रकाश, ध्वनि और सजावट का उपयोग करती है। सिनेमा में मानव को गहराई से सब कुछ समझाने का अवसर है। यह एक स्क्रीन या पर्दे पर चलती छवियों में सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक मुद्दों का स्थानांतरण है। सिनेमा एक आविष्कार है जिसकी जड़ें प्राचीन कलाओं में हैं। सिनेमा की निर्मिती के पूर्व कथानक का निर्माण एवं उसपर गहन विचार किया जाता हैं। पूर्व में केवल एक संकल्पना होती हैं। इस संकल्पना के भी विभिन्न स्त्रोत पाये जाते हैं। जैसे की, कोई सत्य घटना, काल्पनिक घटना, विशिष्ट सांस्कृतिक मान्यता एवं परम्परा(जैसे की कान्तारा), वैज्ञानिक आविष्कार, युद्ध, अप्रिय घटनाये, जीवनिया, नाटक, आपदाएं एवं उपन्यास। इन सभी स्त्रोतों में से सबसे बृहत और आसानी से उपलब्ध होने वाला स्त्रोत है उपन्यास। उपन्यास अपने अपेक्षाकृत दीर्घ लेखन के माध्यम से कहानी या कथानक के रूप में जानी जाने वाली युक्ति द्वारा प्रेरित होता है। उपन्यास की रचना अक्सर उपन्यासकार द्वारा की जाती है, जिसमें वह आमतौर पर साहित्यिक गद्य शैली का उपयोग करते है। उपन्यास मनोरंजन का एक महत्वपूर्ण साधन भी मानागया है। उपन्यास लिखित साहित्य के विधाओं में भी एक प्रमुख विधा है। सिनेमा की पटकथा भी जब निर्मित होती है तब वह भी एक अप्रकाशित

उपन्यास ही होती है। आजकल तो कॉपी राईट के चलते सिनेमा निर्माण के पहले ही पटकथा को उपन्यास के रूप में प्रकाशित कर उसके राईट लेने का संदर्भ हाल ही का सिनेमा दृश्यम-2 में दिखाई पड़ता है। यह तो स्पष्ट है की हर उपन्यास एक सिनेमा पोषक पटकथा हो सकती है और प्रत्येक सिनेमा की पटकथा एक प्रकार का उपन्यास है। जब बात मराठी उपन्यास और उसपर निर्मित फिल्मों की है तो इसकी शुरुआत "कुंकू" सिनेमा से पाई जाती है (इसके पाहिले भी यह प्रयोग पाए जा सकते है पर जानकारी उपलब्ध नहीं)। पर जब मराठी में उपलब्ध प्रसिद्ध उपन्यासों की बात करे तो उनकी संख्या काफी बड़ी होगी उसकी तुलना में मराठी उपन्यासों पर निर्मित सिनेमा की बात करे तो संख्या काफी कम पाई जाती है। लेकिन यह बात तो स्पष्ट होती है कि उपन्यास सिनेमा के मुख्य स्त्रोतों में से एक है।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना:

उपन्यास एक गद्यात्मक लेखन प्रकार है जो साधारणतः विस्तृत स्वरुप में पाया जाता है। यह गद्य वास्तविक, काल्पनिक या दोनों का मिश्रण भी हो सकता है। उपन्यास लेखन का वो प्रकार है, जो न केवल पाठको का मनोरंजन करता है, बल्कि उसपर अपना प्रभाव भी छोड़ता है। एक अच्छा उपन्यास अपने पाठकों को पकड़ कर रखता है। यह पाठको को प्रेरित भी करता है। खासकर इसके मनोवैज्ञानिक प्रभावों को नजरंदाज नहीं किया जा सकता,इसलिए स्टीफन किंग कहते है किताबें एक विशिष्ट सफरी जादू हैं।[1]किताबों को एक अच्छे साथी के रूप में भी परिभाषित किया जाता है इसलिए साहित्य में उपन्यास का एक विशिष्ट स्थान है। साथ ही भारतवर्ष भाषिक विविधताओं के लिए जाना जाता है। जब बात साहित्य की है तो भारत देश साहित्य में अग्रसर पाया जाता है। विभिन्न स्रोतों से प्रति देश प्रति वर्ष प्रकाशित पुस्तक शीर्षकों की संख्या में भारत देश दसवें पायदान पर है। वर्ष 2013 में कुल 90000 पुस्तक भारत में प्रकाशित हो चुकी थी। आईएसबीएन के साथ 2018 में भारत देश 129,326 किताबों के साथ

चौथी पायदान पर था।[2]भारत में एक निजी स्वामित्व वाली शोध संस्था, द पीपल्स लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ़ इंडिया ने अपने देशव्यापी सर्वेक्षण के दौरान भारत में 66 से अधिक विभिन्न लिपियों और 780 से अधिक भाषाओं को दर्ज किया है, जिसे यह संगठन भारत में सबसे बड़ा भाषाई सर्वेक्षण होने का दावा करता है। (सहाय, 2013)शायद ही कोई ऐसा देश विश्व में हों जहा इतनी सारी भाषाएँ बोली या लिखी जाती हों। जब बात मराठी भाषा की हो तो 'लीळा चरित्र' से इसकी शुरआत पायी जाती है। संत साहित्य में तो मराठी अग्रणी भी मानी जाती है वही आधुनिक भारत में तो मराठी समाज सुधार संबंधी लेखन की भी कोई कमी नहीं पायी जाती है। मराठी को पारंपरिक रूप से संस्कृत से विकसित व संस्कृत की अपेक्षाकृत आधुनिक भाषा माना जाता है। शास्त्रीय भाषा की स्थिति के अपने दावे को पुष्ट करने के लिए महाराष्ट्र राज्य द्वारा नियुक्त शास्त्रीय मराठी समिति द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजी साक्ष्य इंगित करते है कि यह कम से कम 2,300 साल पहले संस्कृत के साथ सहोदर के रूप में अस्तित्व में थी।[3] मराठी भाषा के साहित्य में और भारतीय फिल्म इतिहास में मराठी सिनेमा की एक विशेष जगह रही है। दादा साहेब तोरणे (आर॰ जी॰ तोर्णे) की 'पुण्डलिक' एक मूक मराठी फिल्म पहली भारतीय फिल्म थी जो 18 मई 1912 को 'कोरोनेशन सिनेमेटोग्राफ', मुंबई, द्वारा भारत में रिलीज़ हुई।[4]भारत की पहली पूरी अवधि की फीचर फिल्म का निर्माण दादा साहब फाळके द्वारा किया गया था। दादा साहब भारतीय फिल्म उद्योग के अगुआ थे। वे भारतीय भाषाओँ और संस्कृति के विद्वान थे जिन्होंने संस्कृत महाकाव्यों के तत्वों को आधार बनाकर राजा हरिश्चन्द्र (1913), मराठी भाषा की मूक फिल्म का निर्माण किया था।[5] यह सब साबित करता है कि भारतीय साहित्य में मराठी साहित्य

---

[3]https://timesofindia.indiatimes.com/city/mumbai/clamour-grows-for-marathi-to-be-given-classical-language-status/articleshow/63776578.cmsसे अनुवादित 17_03_2023

[4]https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%A4%E0%A5%80%E0%A4%AF_%E0%A4%B8%E0%A4%BF%E0%A4%A8%E0%A5%87%E0%A4%AE%E0%A4%BE#cite_note-Maharashtratimes-29

[5]https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%A4%E0%A5%80%E0%A4%AF_%E0%A4%B8%E0%A4%BF%E0%A4%A8%E0%A5%87%E0%A4%AE%E0%A4%BE#cite_note-Maharashtratimes-29

अग्रणी में से एक तो रहा ही है और सिनेमा में भी मराठी अग्रणी रही है। इन दोनों स्थितियों में मराठी को केंद्रित करते हुए उपन्यासों और सिनेमा के संबंध का अध्ययन प्रासंगिक बन जाता है।

उपन्यास क्या है?

उपन्यास अपने अपेक्षाकृत दीर्घ लेखन के माध्यम से कहानी या कथानक के रूप में जानी जाने वाली युक्ति द्वारा प्रेरित होता है। उपन्यास की रचना अक्सर उपन्यासकार द्वारा की जाती है, जिसमें वह आमतौर पर साहित्यिक गद्य शैली का उपयोग करते है। उपन्यास मनोरंजन का एक महत्वपूर्ण साधन है। यह दृक माध्यम का सबसे प्रभावशाली मनोरंजन साधन भी माना गया है। उपन्यास स्थानीय पाठको तक ही सीमित न रहते हुए इसका प्रसार वैश्विक पटल पर भी पाया जाता है। हैरी पॉटर जैसे उपन्यास की भारत में लोकप्रिय होना इसका उत्तम उदाहरण है। वैश्वीकरण में उपन्यासों के दायरे को भी बढ़ा दिया है। दूसरी ओर उपन्यास न केवल मनोरंजन तक सीमित है बल्कि इसके मनोवैज्ञानिक प्रभाव तो अधिक महत्वपूर्ण होते है। उपन्यास पाठकों को कथा के सफर पर लेकर भी जाता है। यदि उपन्यास उत्तम भाषा में लिखा हों तो पढ़ते समय वह न केवल पाठकों को कथा मे जकड़ लेता बल्कि उसके मानस में उस कथा का चित्रण भी निर्माण करता है। यही कारण है कि छत्रपती शिवाजी महाराज पर बने सिनेमा से ज्यादा प्रभावी ऊनपर लिखा गया लेखन साहित्य पाया जाता है।

सिनेमा क्या है?

सत्यजीत रे कहते है "फिल्म छवि हैं,फिल्म शब्द है,फिल्म गति है,फिल्म नाटक है,फिल्म कहानी है,फिल्म संगीत है-फिल्म में मुश्किल से एक मिनट का टुकड़ा भी इन सब बातो को एक साथ दिखा सकता है।" इंगमार बर्गमैन कहते है "फिल्म स्वप्न की तरह है,संगीत की तरह है| यह कलारूप जिस तरह हमारी चेतना को प्रभावित करता है,कोई अन्य कलारूप नहीं कर सकता| यह भावनाओं के हमारे घर में,आत्मा के अँधेरे कमरों में सीधे और गहरे प्रवेश करता है।"(बिप्लव, 2020) सिनेमा कला की एक शाखा है जो फिल्म में संवाद, संपादन, दृश्य के लेआउट, प्रकाश, ध्वनि और सजावट का

उपयोग करती है। सिनेमा में मानव को गहराई से सब कुछ समझाने का अवसर है। यह एक स्क्रीन या पर्दे पर चलती छवियों में सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक मुद्दों का स्थानांतरण है। सिनेमा एक आविष्कार है जिसकी जड़ें प्राचीन कलाओं में हैं। यह मोशन पिक्चर्स की रिकॉर्डिंग है। हालांकि सिनेमा का साहित्य, चित्रकला या अन्य ललित कलाओं की तरह गहरा इतिहास नहीं है, लेकिन इसने अपनी अभिव्यक्ति की संभावनाओं को अपने उद्भव के तुरंत बाद विकसित किया है।[6] भलेही सिनेमा का साहित्य, चित्रकला या अन्य ललित कलाओं की तरह गहरा इतिहास नहीं है परंतु आर्थिक तौर तकनीकी तौर पर सबसे विकसित और मनोरंजन के क्षेत्र में अधिक लोकप्रिय इसे ही पाया जाता है। सिनेमा भी केवल मनोरंजन तक सीमित न हो कर जनजागृति, सामाजिक परिवर्तन, समाज सुधार,एवं जनसंचार का एक महत्वपूर्ण भाग रहा है। दूसरी ओर बाज़ारों में उपलब्ध उत्पादो के प्रसार में सिनेमा अहम भूमिका निभाते है।

सिनेमा के स्त्रोत:

सिनेमा की निर्मिती के पूर्व उसके कथानक के निर्माण पर गहन विचार किया जाता हैं। पूर्व में केवल एक संकल्पना होती हैं। इस संकल्पना के भी विभिन्न स्त्रोत पाये जाते हैं। जैसे की, कोई सत्य घटना, काल्पनिक घटना, विशिष्ट सांस्कृतिक मान्यता एवं परम्परा (जैसे की कान्तारा), वैज्ञानिक आविष्कार, युद्ध, अप्रिय घटनाये, जीवनिया, नाटक, आपदाए एवं उपन्यास । इन सभी स्त्रोतों में से सबसे बृहत और आसानी से उपलब्ध होने वाला स्त्रोत है उपन्यास। उपन्यास लिखित साहित्य के विधाओं में भी एक प्रमुख विधा है। इस स्त्रोत का जिस हद तक सिनेमा के स्त्रोत के रूप में उपयोग होना चाहिए उस हद तक नहीं हो पाया है। आज भी चुनिंदा सिनेमा ही उपन्यास पर पाए जाते हैं, इतना प्रमुख आसान महत्वपूर्ण स्त्रोत आज भी अनछुआ ही पाया जाता हैं।

Copyright@2023 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

उपन्यास एवं सिनेमा का अंतर्संबंध:

सिनेमा और साहित्य ये ऐसे दो घटक है जो एक दूसरे से परस्पर संबंधित है। साहित्य की भिन्न विधायें है जिसमें से एक विधा सिनेमा है। सिनेमा के पटकथा का स्त्रोतों में से एक महत्वपूर्ण बृहत् स्त्रोत साहित्य है। साहित्य की विधाओ में से नाटक, उपन्यास,लोक कथाएं,लोकगीत,धार्मिक ग्रंथ, दंत कथाएं एवं तत्सम विधाओ के ऊपर सिनेमा की निर्मिती करना संभावित भी है एवं प्रचलित भी हैं।

जब बात इन दो भिन्न विधा के अंतर्संबंध की है तब यह देखा जाता है कि सिनेमा की पटकथा भी अपनी निर्मिति के दौरान एक अप्रकाशित उपन्यास ही होती है। आजकल तो कॉपी राईट के चलते सिनेमा निर्माण के पहले ही पटकथा को उपन्यास के रूप में प्रकाशित कर उसके राईट लेने का संदर्भ हाल ही का सिनेमा दृश्यम-2 में दिखाई पड़ता है। जिससे यह बात स्पष्ट होती है कि हर उपन्यास एक सिनेमा पोषक पटकथा हो सकती है और प्रत्येक सिनेमा की पटकथा एक प्रकार का उपन्यास है। उपन्यास पर निर्मित सिनेमा विस्तृत पैमाने पर दर्शकों तक पहुंच जाता हैं,उपन्यास लिखित रूप में होने के कारण उसकी कहानी मे रहने वाले पात्र, उसमे आयी हुई हर घटना सिर्फ पढ़कर ही अनुभव की जा सकती है जबकि सिनेमा में घटनाओं को देखा जाता है। चूंकि सिनेमा दृश्य-श्राव्य माध्यम में होता है इसलिए उसके कथानक को बेहतर तरीके से महसूस किया जा सकता है। उपन्यास और सिनेमा में और एक अंतर्संबंध पाया जाता है जैसे कि कई बार उपन्यास पढ़ने के बाद उसपर निर्मित सिनेमा देखने की इच्छा निर्माण होती है। वही बहुत बार यह उलटा होते हुए भी पाया जाता है। उदाहरण के लिए जब 'बाजीराव मस्तानी' सिनेमा आया तब 'राऊ' इस मराठी उपन्यास की मांग में तो बढ़ोतरी हुई ही थी साथ ही में पूना के शनिवारवाडा को देखेने के लिए आनेवाले लोगो की तादात भी बढ़ी थी। वस्तुतः आज सिनेमा और साहित्य की संबंधात्मक अवधारणायें विभिन्न स्तरों पर अलगीकृत हो गयी हैं। लेकिन स्थूल रूप में एक अच्छे निर्देशक की साहित्यिक कृति पर आधारित फिल्म ने जनमानस को सिनेमा के असली ताकत से परिचित तो कराया ही है। (कुमार, 2010) यहाँ बात सिनेमा श्रेष्ठ है या

उपन्यास! इसकी नहीं है बल्कि इन दोनों की अपनी एक अलग जगह है। बावजूद इसके इन दो विधा में गहरा अंतर्संबंध पाया जाता है। उपन्यास एवं सिनेमा का अंतर्संबंध अत्याधिक घनिष्ठ पाया जाता है।

मराठी उपन्यास और सिनेमा का संदर्भ:

जब बात मराठी उपन्यास और उसपर निर्मित फिल्मों की है तो इसकी शुरआत "कुंकू" सिनेमा से पाई जाती है। यह फिल्म नारायण हरी आपटे द्वारा लिखित उपन्यास "न पटणारी गोष्ट" के कथानक पर 1937 में वी. शांताराम द्वारा निर्देशित की गई। इसे मराठी में पहिला प्रयास कहा जा सकता है(इसके पहले भी यह प्रयोग पाए जा सकते है पर जानकारी उपलब्ध नहीं)। इस उपन्यास और सिनेमा दोनों को जनमानस द्वारा सराहा गया। साथ ही "श्याम ची आई" सिनेमा जो साने गुरूजी द्वारा लिखित "श्याम ची आई" यह उपन्यास पर 1953 में प्रल्हाद केशव अत्रे द्वारा निर्देशित की गई। और 1977 में गो. नि. दांडेकर द्वारा लिखित "जैत रे जैत" उपन्यास पर जब्बार पटेल द्वारा निर्देशित "जैत रे जैत" सिनेमा आता है। उसके बाद 1979 में सिहांसन, 1995 में बनगरवाडी आदि सिनेमा आते है। 1995 से 2009 के बिच ऐसा प्रयास नहीं देखा जाता है(हो भी तो इस पर जानकारी उपलब्ध नहीं)। इस प्रयास की पुन: शुरआत 2009 में डॉ.राजन गवस द्वारा लिखित "चौंडक" और "भंडारभोग" उपन्यास पर निर्मित राजीव पाटिल निर्देशित "जोगवा" सिनेमा आया। तदुपरांत 2010 में जयवंत पवार का उपन्यास "अधांतर" पर महेश मांजरेकर निर्देशित "लालबाग परळ", 2010 में आनंद यादव का उपन्यास "नटरंग" पर रवी जाधव निर्देशित "नटरंग", 2011 में मिलिंद बोकील के उपन्यास "शाळा" पर संजय ढाके द्वारा निर्देशित "शाळा", 2012 में व.पु.काळे का उपन्यास "पार्टनर" पर समीर रमेश सुर्वे निर्देशित "श्री पार्टनर",2013 में राजन खान की उपन्यास "सत ना गत" पर राजू पर्सेकर द्वारा निर्देशित "सत ना गत", और सुहास शिरवळकर के उपन्यास "दुनियादारी" पर संजय जाधव निर्देशित "दुनियादारी", 2014 में डॉ प्रकाश बाबा आमटे के उपन्यास "प्रकाशवाट" पर समृद्धी पोरे द्वारा निर्देशित "डॉ प्रकाश बाबा आमटे",2017 में जयवंत दळवी का उपन्यास "ऋणानुबंध" पर प्रसाद ओक द्वारा निर्देशित "कच्चा लिंबू",2017 में बाबा भांड के उपन्यास "दशक्रिया" पर संदीप भालचंद्र पाटील द्वारा निर्देशित "दशक्रिया", 2018 में कांचन काशिनाथ घाणेकर के उपन्यास "नाथ हा माझा" पर अभिजीत देशपांडे द्वारा निर्देशित "आणि काशीनाथ घाणेकर",

2019 में नीला सत्यनारायण के उपन्यास "ऋण" पर समीर रमेश सुर्वे निर्देशित "जजमेंट" और 2019 में अण्णाभाऊ साठे का उपन्यास "आवडी" पर प्रवीण क्षीरसागर द्वारा निर्देशित "इभ्रत"आदि प्रयास पाए जाते है। 2022 में अरुण साधू का उपन्यास "झिपऱ्या" पर केदार वैद्य द्वारा निर्देशित "झिपऱ्या", और विश्वास पाटील का उपन्यास "चंद्रमुखी" पर प्रसाद ओक निर्देशित "चंद्रमुखी" आदि सिनेमा में उपन्यास के नाम को ही सिनेमा का नाम दिया गया है। पर यहाँ एक बात गौर करने लायक है, जितने भी ऐसे प्रयास हुए उसमें कुछ उपन्यास और सिनेमा के नाम में कोई परिवर्तन नहीं दिखता है और कुछ प्रयासों में उपन्यास के नाम एवं सिनेमा के नाम में अत्यधिक अंतर पाया जाता है।

निष्कर्ष:

उपन्यास और सिनेमा यह दोनों साहित्य की दो भिन्न विधा है। एक केवल दृश्य है तो दूसरी दृश्य-श्राव्य है। साहित्य में दोनों की जगह अहम रही है। दोनों के अपने अलग-अलग श्रोता समूह तो है ही पर इनमें समान समूह भी है जो इन दोनों विधाओ को पसंद करते है। उपन्यास यह एक गद्यात्मक लेखन प्रकार है जो कि साधारणतः विस्तृत स्वरुप में पाया जाता है। वही सिनेमा आम तौर पर कला की एक शाखा है फिल्म में संवाद, संपादन, दृश्य के लेआउट, प्रकाश, ध्वनि और सजावट का उपयोग करती है। पर जब सिनेमा निर्मिती की बात है तो सिनेमा के पटकथा या कथानक के भिन्न स्त्रोत हो सकते हैं जिसमे सत्य घटनाएं, आविष्कार, कल्पनाए, और उपन्यास। इन स्त्रोतों में उपन्यास महत्वपूर्ण बनाता है यह स्पष्ट है सिनेमा की पटकथा यह अपने आप में एक उपन्यास ही है भले ही वह प्रकाशित हो या अप्रकाशित। दूसरी ओर भारत वर्ष अपने साहित्य के लिए भी प्रसिद्ध है। शायद ही धरती पर ऐसा कोई देश होगा जिसके पास इतनी भिन्न भाषाओं में साहित्य उपलब्ध हों। जब बात मराठी साहित्य की है तो भारत देश में मराठी साहित्य की अपनी एक भिन्न पहचान और जगह दिखाई पड़ती है। उपन्यास से सिनेमा निर्मिती का प्रचलन मराठी साहित्य में मिलता भी है। किंतु जब मराठी में उपलब्ध प्रसिद्ध उपन्यासों की बात करें तो उनकी संख्या काफी बड़ी होगी, उसकी तुलना में मराठी उपन्यासों पर निर्मित सिनेमा की बात करें तो संख्या काफी कम पाई जाती है।हालांकि उपन्यास सिनेमा के मुख्य स्त्रोतों में से एक है यह तो विवेचन से स्पष्ट होता है।

संदर्भ सूची :

कुमार, एच. (2010) *सिनेमा और साहित्य,* दिल्ली: संजय प्रकाशन, ISBN: 81-7453-014-2 पृ. 16

बिप्लव, सु. (2020) सिनेमा के विविध संदर्भ, दिल्ली: अनुज्ञा बुक्स, ISBN: 978-93-89341-76-8

https://www.audible.com/blog/quotes-bibliophiles से अनुवादित 17_03_2023

https://en.m.wikipedia.org/wiki/Books_published_per_country_per_year से अनुवादित 17_03_2023

https://timesofindia.indiatimes.com/city/mumbai/clamour-grows-for-marathi-to-be-given-classical-language-status/articleshow/63776578.cms से अनुवादित 17_03_2023

https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%A4%E0%A5%80%E0%A4%AF_%E0%A4%B8%E0%A4%BF%E0%A4%A8%E0%A5%87%E0%A4%AE%E0%A4%BE#cite_note-Maharashtratimes-29

https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%A4%E0%A5%80%E0%A4%AF_%E0%A4%B8%E0%A4%BF%E0%A4%A8%E0%A5%87%E0%A4%AE%E0%A4%BE#cite_note-Maharashtratimes-29

https://www.igi-global.com/dictionary/user-generated-cinema/43891 से अनुवादित 17_03_2023

Cite Your Article As:
Vrushali Suresh Bapat, & Surbhi Viplav. (2023). UPNYAS AUR CINEMA KA ANTSAMDH: VISHESH SANDHRBH MARATHI UPNYAS. Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,, 11(78), 392–400.
https://doi.org/10.5281/zenodo.8220624

Copyright@2023 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language